Vishal
V.S.J. College
Rajnagar

—: कार्ल रिटर (1779 - 1859) :—

हमबोल्ट के समकालीन, आधुनिक भूगोल के जनक कार्ल रिटर का जन्म जर्मनी के Quedlinburg में हुआ। Gotting University में भाषाओं, मानव-प्रकृति, इतिहास, आदि के अध्ययन ने इनके चिन्तन को परिमार्जित किया। बर्लिन में 1807 से हम्बोल्ट के साहचर्य का प्रभाव भी पड़ा। लिपजिग तथा बर्लिन में अध्यापन-काल में विद्यार्थियों को अपनी विचारधाराओं के प्रसार की दीक्षा दी।

योगदान :—

(A) रचनाएँ → (i) यूरोप का भौगोलिक, ऐतिहासिक एवं सांख्यिकीय चित्रण, (ii) यूरोप के 6 मानचित्र, (iii) New Geography, (iv) विधि-तंत्र पर शोध-पत्र, (v) Erdkunde.

(B) भूगोल का उद्देश्य एवं विषय-क्षेत्र → उन्होंने भूगोल को पृथ्वी के सभी तत्वों का अध्ययन करने वाला विज्ञान माना। Erdkunde का अर्थ है "Earth Science"। अतः उन्होंने भूतल के सभी जैविक - अजैविक तत्वों के वैज्ञानिक विश्लेषण पर बल देकर भूगोल को पृथक वैज्ञानिक आधार दिया। "Geography has a right to be considered a sharply defined science"

— Ritter

"मेरा उद्देश्य सिर्फ भौगोलिक तथ्यों को एकत्र कर उन्हें व्यवस्थित करना ही नहीं है, बल्कि सामान्य नियमों को खोजना है जो कि प्रकृति की विषमता और विभिन्नता में निहित है।" — Ritter.

(C) भौगोलिक अध्ययन की विधियाँ →

(i) आनुभविक (Empirical) विधि → सावधानीपूर्वक प्रेक्षण द्वारा तथ्य संग्रह कर सत्यापित करना चाहिए। "हमें पृथ्वी के नियमों के लिए पृथ्वी से पूछना चाहिए"।
— Ritter

(ii) घटनाओं के causal relationship को समझने के लिए तुलनात्मक विधि उत्तम है। उन्होंने deductive विधि अपनाई।

~~(iii) विश्लेषणात्मक (Analysis) एवं संश्लेषणात्मक विधि~~ →

(iii) भौगोलिक वर्णन में मानचित्रों का उपयोग हो।

(D) पार्थिव तत्वों में अंतर्सम्बंध → किसी क्षेत्र की स्थिती, उच्चावच, जलवायु, पौधों, जन्तुओं, मानवों के बीच अंतर्सम्बंध होता है। प्राकृतिक एंव मानवीय तत्व परस्पर प्रतिक्रियारत है। वे एक-दूसरे के पूरक है। अतः उनका पृथक अध्ययन अनुचित है। उनकी आस्था प्रकृति की एकता एंव अनेक जैविक - अजैविक तत्वों में पारस्परिक (Reciprocal) संबंध में थी।

(E) प्रादेशिक अध्ययन → वे मूलतः प्रादेशिक (Lander-Kunde) अध्ययन के समर्थक थे। उनके अनुसार भौगोलिक तत्वों से भिन्नता से विभिन्न प्रदेश बनते है। प्रदेशों के समान तथा असमान तत्वों का अध्ययन भूगोल का उद्देश्य है। उन्होंने प्रदेशों के राजनैतिक आधार पर नहीं, बल्कि प्राकृतिक प्रदेशों में बाँटने पर बल दिया।

(F) भूतल की सम्पूर्णता की संकल्पना (Concept of whole)
→ प्रदेशों में भिन्नताओं के बावजूद उनमें कुछ समरूपताएँ भी है। क्योंकि एक प्रदेश की घटनाओं का

प्रभाव दूसरे प्रदेशों पर भी पड़ता है। अतः विभिन्न प्राकृतिक प्रदेशों का सम्पूर्ण विश्व के संदर्भ में अध्ययन करना चाहिए। विभिन्न प्रदेशों के मिलने से पृथ्वी का पूर्ण स्वरूप बनता है। अतः प्रदेशों का तुलनात्मक अध्ययन एवं संश्लेषण (Synthesis) द्वारा पृथ्वी की सम्पूर्णता का अध्ययन करना चाहिए।

(G) ईश्वरिय उद्देश्यवादी (Teleological) चिन्तन → इनके अनुसार ईश्वर ने प्रत्येक क्षेत्र को वह आकृति एवं स्थिति दी है जो वहाँ के निवासियों के विकास में सहायक हो। ईश्वर ने प्रकृति की रचना मानविय उपयोग के लिए सोद्देश्य की है। हम्बोल्ट की आलोचना करते हुए उन्होंने कहा, "यद्यपि Cosmos एक उत्कृष्ट ग्रंथ है, पर उसमें कहीं एक बार भी ईश्वर की प्रशंसा नहीं की गई है।"

(H) भौगोलिक भिन्नताएँ — (Geographical diversities) → विभिन्न प्रदेशों के भूतल के तत्वों का अध्ययन सकारण करना चाहिए, क्योंकि कारकों की प्रतिक्रियाएँ विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न होती है।

(I) मानव केन्द्रिय विचारधारा (Anthropo-centric View) → इनके भौगोलिक अध्ययन का केन्द्र मानव था। "As the body is made for soul, so is the physical globe made for mankind" — Ritter.

मानव भूतल की उपज है। मानव और प्रकृति दोनों में गत्यात्मक (dynamic) तत्व है। "History and geography much always remain inseprable". — Ritter

(J) नियतिवादी चिन्तन (Deterministic view) → इनके अनुसार भौतिक तत्वों के अनुरूप ही मानवीय क्रिया-कलाप होते हैं। मानव को वातावरण के अनुसार ही सामंजस्य करना पड़ता है। प्रकृति से प्रतिरोध कर मनुष्य जीवित नहीं रह सकता।

(K) अन्य मान्यताएँ (Other concepts) → इन्होंने पृथ्वी को जल और स्थल गोलार्द्धों में बाँटा। द० गोलार्द्ध में जल की अधिकता बतलाई। धरातल को पर्वत, पठार, निम्नभूमि, एवं मध्यवर्ती - चार इकाइयों में बाँटा। तटीय भाग में सम और आन्तरिक भाग में विषम जलवायु का बोध करवाया। मानव प्रजातियों का रंग के आधार पर वर्गीकरण किया।

: आलोचनाएँ :

(i) - रिटर की विचारधाराएँ प्रायः अस्पष्ट, विवादास्पद हैं।
(ii) - फ्रोबेल और हैटनर ने इनकी एकांगी मानव-केन्द्रित (Anthropocentric) दृष्टिकोण की आलोचना की।
(iii) - इनके ईश्वरवादी सोद्देश्य चिन्तन को अवैज्ञानिक तथा "Struggle and Survival" मान्यता के प्रतिकूल माना गया।
(iv) - इन्होंने बिना इतिहास के भूगोल को अधूरा माना। यह भूगोल के स्वतंत्र अस्तित्व के विरुद्ध है।
(v) - साधनहीन होने से विस्तृत विवरण के लिए इनके पास यात्रा-आधारित तथ्यों की कमी थी। अतः इनके कार्यों में शुद्धता की कमी थी।

Scanned with CamScanner